सं. ओ. वि./एफ डी/22-87/6737.---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं दरेशियो विकरण इण्डिया लिंद, 14/2, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री हीरा लाल शाह, मार्फत एटक झाफिस, मार्किट नं ा, एन आई. टी. फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रीबोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रीद्यिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीद्यस्चना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए ग्रीद्यसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रीधिनियम की घारा 7 के ग्रिद्योग गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:-

क्या श्री हीरा लाल शाह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ब्रो. वि. एफ डी/33-87/6744. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० राजी मशीन टूरज, प्लाट नं० 54, सैक्टर 27-ए, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री सतनरण शर्मी, पुत्र श्री भुन्ता शर्मी, मार्फत श्री मार. एल. शर्मी, जी. ई. डब्लयू. यूनियन। कि/16, एन. श्राई टी. फरीदाबाद तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई मौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यवाल इस विवाद को न्यायिनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अत्र, श्रीद्योगिक वित्राद श्रीधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/ 15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रीधसूचना सं 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उन्त श्रीधिनियम की धारा 7 के श्रीधिन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादशस्त वा उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणीय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उन्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री सतनरेण शर्मा की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 19 फरवरी, 1987 🐇 🦠

स० ग्रो० वि०/एफडी/18-87/7349 --चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० डी०पी० आटो इण्डस्ट्रीज, प्लाट नं० 228, सैक्टर 24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री देवनन्दन सिंह, मापंत श्री चश्र लाल ग्रेंबराय, 1.0/119, एन की देवनन्दन सिंह, मापंत श्री चश्र लाल ग्रेंबराय, 1.0/119, एन की देवनन्दन सिंह, मापंत श्री चश्रीकोणिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रीधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप धारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रीधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रीधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाब, को विवादग्रस्त या उस से सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनण्य एवं पचांट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते है जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या भी देवनन्दन सिंह की सेवामों का समापन भ्यायोचित तथा ठीक है? बढि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?